डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस.आर.ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-IV

Date:- 28-1-2022

Ajanta
Page No.
Date

'कानों में कंगना' का कथानक

नरेन्द्र के पिता योगीश्वर के पास उसे धर्म-काव्य का अध्ययन करने के लिए भेजते हैं। नरेन्द्र धर्म ग्रन्थ का गहन अध्ययन करने के पश्चात वहाँ पूर्णाहुति के लिए अपने पिता के कथनानुसार एक जोड़ा पीताम्बर, पाँच स्वर्ण मुद्राएँ और उनकी पुत्री (योगीश्वर की) के लिए दो कनक-कंगन ले जाता है। योगीश्वर सब लौटा देते हैं, परंतु कंगन को किरन उठा ले जाती है। नरेन्द्र योगीश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए किरने को पत्नी बना लेता है। कुछ समय पश्चात कुसंगति के कारण नरेन्द्र किन्नरी नाम की वेश्या के प्रति आसक्त हो जाता है। वह अपनी पत्नी किरन से विमुख हो जाता है और अपना प्रायः सभी धन और आभूषण किन्नरी पर लुटाने लगता है। वह अन्त में किरन के पास जाता है कि उसे कोई आभूषण मिल सके। किरन रुग्नावस्था में है और मृतप्राय स्थिति में लगती है। ऐसी परिस्थिति में किरन अपने पति नरेन्द्र को वही कानों का कंगना देती है। वह कंगना देखकर नरेन्द्र को पश्चाताप होता है, परंतु वह अनुभव करता है कि अब समय इतना अधिक बित चुका है कि वह अपने जीवन में अंधकार ही देखता है।

Scanned by CamScanner